**International Journal of Multidisciplinary Education and Research**
**ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.in**
**Volume 1; Issue 10; December 2016; Page No. 32-34**

# आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक तकनीकी प्रक्रिया का विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

**[1] अरविन्द कुमार, [2] डॉ. जय सिंह**

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

**सरांश**
आधुनिक समय में शिक्षा अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। इन समस्याओं के समाधान में शैक्षिक तकनीकी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। इस कारण इसकी शिक्षा में आवश्यकता है। विद्यालय में अध्ययन के लिए अनेक विद्यार्थी आते हैं। इन विद्यार्थियों के उचित दिशा निर्देश देने में शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकता पड़ती है। शोध क्षेत्र में 42.4 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध है। शोध क्षेत्र में 58.29 प्रतिशत इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है।

**मूल शब्दः** आजमगढ़ जिला, हाई स्कूल, शैक्षिक तकनीकी, विद्यार्थी, शिक्षण अधिगम, अध्ययन

## 1. प्रस्तावना
शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है। शिक्षा से मनुष्य के अन्तः चक्षु खुल जाते हैं। उसे आत्मिक तथा अलौकिक प्रकाश मिलता है। शिक्षा से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। किसी भी राष्ट्र या समाज में जो उन्नति परिलक्षित होती है, वह उस राष्ट्र अथवा समाज की शिक्षा का प्रतिफल है तथा किसी समाज या राष्ट्र को अधोगति में जाना अशिक्षा का द्योतक है। शिक्षा द्वारा इस ज्ञान में वृद्धि होती है, जो पारस्परिक संबंधों के निर्धारण तथा व्यक्ति के विकास में सहायक है।
शिक्षा के क्षेत्र में असमानतायें पाई जाना एक सामान्य सी बात है। विशेषकर विकासशील देशों में सुविधाओं का असमान वितरण देखने में आता है। यह शिक्षा सुविधायें न केवल गुणवत्ता के मत से असमान है बल्कि शिक्षा की पहुंच के हिसाब से भी असमान पाई जाती है। आमतौर पर यह पाया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की सुविधायें शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम है यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी कम ही हो पाता है।
सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने हेतु उपयोग में लाई जाने वाली विभिन्न तकनीकों का अच्छे सम्प्रेषण तकनीकी है। दरूभाष, दूरदर्शन, इन्टरनेट, सेलेलाइट आदि इस तकनीकी के अच्छे उदाहरण है। सम्प्रेषण तकनीकी के बिना सूचना तकनीकी अधूरी है एवं इसका प्रभावी उपयोग नही किया जा सकता। अतः ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं इसीलिए सूचना सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग करने का सशक्त साधन कम्प्यूटर है, जो कि हेड–स्टार्ट कार्यक्रम के माध्यम से विद्यालयों तक पहुंचाया गया है।
विज्ञान के सृजन तथा निर्माण को जितना बढ़ावा दिया है वह सब तकनीकी के माध्यम से ही हुआ है। अमेरिका, रूस, जापान आदि देशों में विकास, विज्ञान तथा तकनीकी के बल पर ही हुआ है। सामान्य भाषा में तकनीकी का तात्पर्य शिल्प अथवा कला विज्ञान से है। तकनीकी विज्ञान का कला में परिवर्तन है जो सृजन, निर्माण तथा उत्पादन में सहायक है। दूसरे शब्दों में वैज्ञानिक ज्ञान के व्यवहार रूप में प्रयोग को तकनीकी कहते हैं। जैकेटा ब्लूमर के शब्दों में – "तकनीकी वैज्ञानिक सिद्धान्त का प्रयोगात्मक लक्ष्यों में प्रयोग मात्र है।"

## 2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य न केवल आजमगढ़ जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के समस्त संदर्भो तक किया गया है। विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के उपयोग, छात्रों के शैक्षिक तकनीकी से परिचय के प्रति अभिभावकों की जागरुकता एवं पक्षधरता, विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षा हेतु उपलब्ध कराये जा रहे संसाधनों, विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षा अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन किया गया है।

## 3. शोध की परिकल्पनायें
1. आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध है।
2. हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है।

## 4. उद्देश्य
- शोध क्षेत्र के विद्यालयों में गुणात्मक षिक्षा हेतु उपलब्ध संसाधनों की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र के विद्यालयों में हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग सम्बन्धी छात्रों एवं शिक्षकों की क्षमता का मूल्यांकन करना।

## 5. शोध समस्या का सीमांकन
**5.1 भौगोलिक परिसीमन** – प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र जिला आजमगढ़ है। इसके अन्तर्गत 07 तहसील – बूढनपुर, सगड़ी, निजामाबाद, सदर, फूलपुर, लालगंज व मेंहनगर हैं। जिले के सभी तहसीलो से 5–5 विद्यालय कुल 35 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया।
**5.2 विषयवस्तु का परिसीमन** – अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के समस्त संदर्भो तक किया गया है।

## 6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाएगा –

**6.1 सर्वेक्षण विधि –** प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

**6.2 अवलोकन विधि –** शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति में शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्ष के रूप में चयनित हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

**6.3 साक्षात्कार विधि** – शोध क्षेत्र आजमगढ़ जिले में शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

## 7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। चूंकि आजमगढ़ जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नही है, इसलिए जिले के सभी तहसीलो से 5–5 विद्यालय कुल 35 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया।

शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्ष के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 70 शिक्षक, विद्यालयों के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 70 तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 700 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया।

## 8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक तकनीकी का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – गौड़, प्रकाश (1999)[1], अग्रवाल (1999)[2], कल्पना (2004)[3], शर्मा (2004)[4]

## 9. शोध क्षेत्र का परिचय

जनपद आजमगढ़ भौगोलिक दृष्टि से आजमगढ़ मण्डल के अन्तर्गत 42.40 डिग्री से 43.52 डिग्री पूर्वी देशान्तर तथा 25.17 डिग्री से 26.17 डिग्री उत्तरी मध्य अक्षांश पर गोमती नदी तथा घाघरा नदी के बीच का भू–भाग है। जिसमें मुख्यतः तमसा नदी बहती है। प्राचीनकाल में यह भू–क्षेत्र घने जंगलों से घिरा था अतएव एकांत एवं पवित्र स्थली मानकर वैदिक युग में तमाम महाऋषियों ने इसे अपनी साधना स्थली बनाया था। उस युग में यह क्षेत्र शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया था। राजा आजमशाह के नाम पर इस जनपद का वर्तमान नाम आजमगढ़ पड़ा।

## 10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

**परिकल्पना क्रमांक 1: "**आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध है।"

**तालिका 1:** आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाओं का अध्ययन

| क्र. स. | न्यादर्श | न्यादर्श में चयनित संख्या | हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | उपलब्ध है | | उपलब्ध नही है | | पता नही | |
| | | | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| 1. | प्राचार्य | 35 | 25 | 71.43 | 10 | 28.57 | – | – |
| 2. | शिक्षक | 70 | 34 | 48.57 | 36 | 51.43 | | |
| 3. | अभिभावक | 70 | 28 | 40.00 | 18 | 25.71 | 24 | 34.29 |
| 4. | छात्र | 700 | 284 | 40.57 | 286 | 40.86 | 130 | 18.57 |
| योग | | 875 | 371 | 42.4 | 350 | 40.00 | 154 | 17.6 |

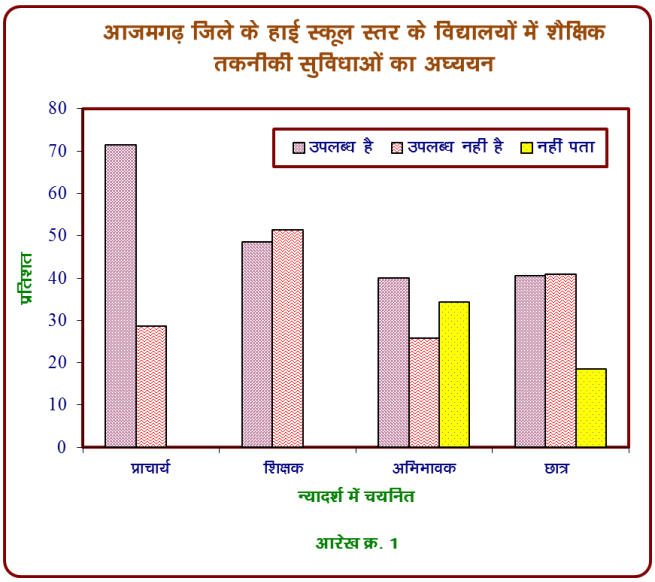


सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 41.43 प्रतिशत प्राचार्य, 48.57 प्रतिशत शिक्षक, 40.00 प्रतिशत अभिभावक व 40.57 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध है।

सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 42.4 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध है। 40.00 प्रतिशत यह मानतें है कि आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध नही हैं जबकि 17.6 प्रतिशत को आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध के सम्बंध में कुछ भी पता नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

**परिकल्पना क्रमांक – 02** ''हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है।"

**तालिका 2:** शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग के सम्बंध में अभिमत

| क्र. स. | न्यादर्श | न्यादर्श में चयनित संख्या | शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग के सम्बन्ध में अभिमत | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | किया जा रहा है | | नही किया जा रहा है | | पता नही | |
| | | | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| 1. | प्राचार्य | 35 | 23 | 65.71 | 8 | 22.86 | 4 | 11.43 |
| 2. | शिक्षक | 70 | 50 | 71.43 | 12 | 17.14 | 8 | 11.43 |
| 3 | अभिभावक | 70 | 36 | 51.43 | 18 | 25.71 | 16 | 22.86 |
| 4. | छात्र | 700 | 401 | 57.29 | 174 | 24.86 | 125 | 17.86 |
| योग | | 875 | 510 | 58.29 | 212 | 24.22 | 153 | 17.49 |

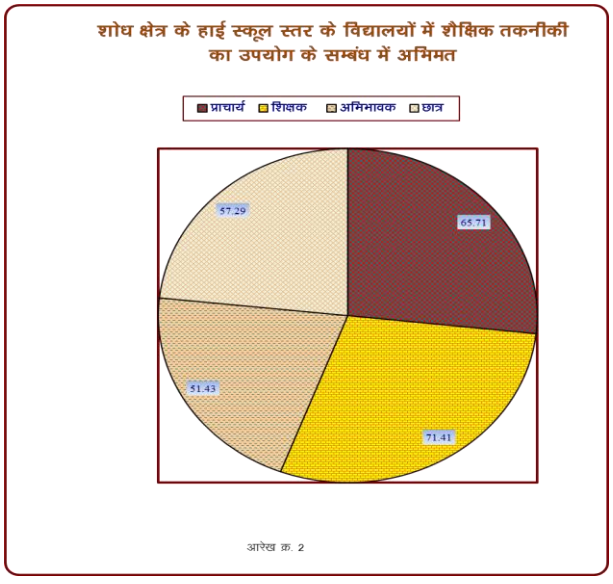


सारणी क्रमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 65.71 प्रतिशत प्राचार्य, 71.43 प्रतिशत शिक्षक, 51.43 प्रतिशत अभिभावक व 57.29 प्रतिशत छात्र यह मानते है कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है।

सारणी क्रमांक 2 मे संकलित प्रदत्तों के अध्ययन से स्पष्ट है कि 58.29 प्रतिशत इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है तथा 24.22 प्रतिशत इस बात से आंशिक सहमत हैं कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है, जबकि 17.49 प्रतिशत इस बात से असहमत हैं कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

## 11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि 42.4 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि आजमगढ़ जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध है। शोध क्षेत्र में 58.29 प्रतिशत इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है।

## 12. संदर्भ

1. गौड़, प्रकाश : कम्प्यूटर अनुप्रयोग, रोजगार और नये आयाम, रोजगार और निर्माण, 14 अक्टूबर 1999.
2. अग्रवाल, अनिल : भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005.
3. कल्पना, राजाराम : भारत में विज्ञान प्रौद्योगिकी : स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. जनकपुरी, नई दिल्ली, 2004.
4. शर्मा, ओ.पी. : ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2004.